धूमावती साधना Dhumavati Sadhana

- यदि किसी व्यक्ति को विशिष्ट पूजा- अनुष्ठान आदि करने पर भी कोई फल प्राप्त नहीं हो रहा है तो इसका तात्पर्य यह है कि उसके ग्रहों की मारकेश दशा चल रही है, अपने प्रारब्ध का फल उसे भोगना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में उसे धूमावती महाविद्या का आश्रय लेना चाहिए। धूमावती चूंकि वृद्धा, विधवा तथा दरिद्रता और कलह की देवी है, इसलिए उनके अनुष्ठान में विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। इनकी साधना सरल नहीं है, क्योंकि वे विघ्नों की अधिष्ठात्री और अमंगला है, इस कारण इनका आवाहन अपने निवास स्थान में नहीं किया जाता है। अतः इनकी उपासना व्यक्ति को खूब सोच-समझकर करनी चाहिए।

धूमावती की साधना रात्रि-काल में ही की जाती है। इस देवी का स्वरूप बड़ा विचित्र है। इनके शरीर का आकार स्थूल है। केश रूखे-सूखे हैं, वेश मलिन है, दोनों स्तन नीचे की ओर लटके हुए हैं, झुके हुए हैं,जैसे किसी वृद्धा स्त्री के होते हैं।

वैसे तो साधारणतया सभी प्रकार की मनोकामनाएं लेकर धूमावती की साधना की जाती है, परन्तु दरिद्रता को दूर करने के लिए, कर्ज से छुटकारे के लिए, किसी को कर्ज दिया हो और वह पैसा वापिस न दे रहा हो, कोई आपको अकारण सता रहा हो, आपकी जमीन-मकान पर कब्जा किये बैठा हो, अनाधिकृत रूप से आपका हक मार रहा हो, घर में हमेशा दरिद्रता, वीरानगी बनी रहती हो, सब कुछ ठीक होते हए भी संतान की प्राप्ति न होना आदि- जब ऐसी स्थितियां दिखायी दें तो भगवती धूमावती की उपासना करना अत्यन्त ही हितकारी होता है। किसी के द्वारा कोख-बंधन कर दिया गया हो, आपका

व्यवसायिक प्रतिष्ठान बांध दिया गया हो, रोजगार, आमदनी बांध दी हो, मित्र से, अधिकारी से, घर के लोगों से विद्वेषण, उच्चाटन करा दिया गया हो, तो उसके लिए इन भगवती की उपासना करनी चाहिए।

विश्व में दुख के चार मूल कारण होते हैं- रूद्र, यम, वरूण और नैऋति देवता। इनमें निऋति ही धूमावती हैं। प्राणियों में मूर्च्छा, मृत्यु, असाध्य रोग, कलह, दरिद्रता, शोक आदि ये देवी ही उत्पन्न करती हैं। व्यक्ति का भिखारी बन जाना, पहनने के फटे-पुराने वस्त्र भी उपलब्ध न होना, भूख-प्यास, वैधव्य की स्थिति, असहनीय शोक, पुत्रशोक अथवा संतानहीनता, महाक्लेश आदि- सब धूमावती के ही स्वरूप हैं। इसलिए ही ऐसी परिस्थितयां उत्पन्न होने के कारण धूमावती का अनुष्ठान किया अथवा कराया जाता है।

नैऋति शक्तियां यूं तो सर्वत्र व्याप्त रहती हैं, लेकिन ज्येष्ठा नक्षत्र इनका प्रधान केन्द्र है। इसी नक्षत्र से यह शक्ति जुड़ी हुई है। यही कारण है कि इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति जीवन पर्यन्त दुख-दरिद्रता भोगता है।

प्रत्येक चातुर्मास-आषाढ़ शुक्र एकादशी से कार्तिक शुक्र तक होता है। इन चार महीनों में नैऋति का साम्राज्य होता है, और देवताओं का सुषुप्ति काल माना जाता है। सन्यासी लोग भी भ्रमण त्याग कर किसी एक स्थान पर रूक जाते हैं। कोई भी शुभ कार्य इन चार महीनों में वर्जित माना जाता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी इसका अन्तिम दिन होता है, जिसे नरक चौदस कहा जाता है। इसी दिन दरिद्रता की देवी धूमावती का गमन होता है और दूसरे ही दिन अमावस्या को रोहिणी नक्षत्र में लक्ष्मी अर्थात् दीपावली का आगमन होता है। यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि महाविधा धूमावती की प्रधानता वर्षा काल

के चार महीनों में मुख्यतः रहती है, और इसी काल में इनका अनुष्ठान विशेष प्रभावी रहता है।

मन्त्र-विधान

भगवती धूमावती की उपासना किसी निर्जन स्थान या श्मशान में की जाती है। किसी कारणवश यदि स्व-निवास पर ही करना पड़े तो अपने घर में इनकी मूर्ति, चित्र अथवा यन्त्र की स्थापना न करें। एक साबुत पान के पत्ते पर रोली, सिन्दूर अथवा हिंगुल से त्रिशुल की आकृति बनाकर, उस पर धूप दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि अर्पित करके मन्त्र-जप आरम्भ करें। जप करते समय अपने हृदय में भावना करें कि भगवती धूमावती मेरे समस्त दुखों, शोकों, पापों, दरिद्रता, कलह, रोगों, विघ्नों और शत्रुओं को अपने खाली सूप में भरकर प्रसन्नता पूर्वक घर से विदा हो रही हैं। मेरे उपर जो भी अभिचार कर्म, बुरी नजर, टोने-टोटके आदि हैं, उन सबको वे अपने सूप में समेट रही हैं। समस्त शत्रुओं तथा भूत-प्रेतादि दोषों को अपने उदर में ले रही हैं और सभी प्रकार की बाधाओं और कष्टों को अपने साथ लेकर वे प्रसन्न चित्त से कंही और जा रही हैं। प्रसन्नावस्था में वे मुझे अभय प्रदान कर रही हैं, जिसके कारण मेरे समस्त रोग, दोष, भय, शत्रु, पीड़ा, क्लेश, विघ्न-बाधाएं, ऋण आदि मुझे कभी भी पीड़ा नहीं दे पायेगें और मां का वरद हस्त सदैव मुझ पर बना रहेगा।

पूजा व मन्त्र-जप करने के उपरान्त पान के पत्ते को उठाकर किसी ऐसे स्थान पर विसर्जित करें, जंहा किसी का पैर न पड़े या कोई उलखने न पाये।

कुछ विशिष्ट ज्ञातव्य तथ्यः-

भगवती के मन्त्र का पुरश्चरण ८ लाख जप का है। ८० हजार मंत्रों से हवन किया जाता है। यदि ८० हजार आहुतियों की सामर्थ्य न हो तो उतनी संख्या में या उसकी दोगुनी संख्या में मंत्र जप कर लेना चाहिए और सामर्थ्यानुसार होम करा देना चाहिए। हवन में आक की लकड़ी का प्रयोग विशेष रूप से करना चाहिए। पूजन सामग्री में सभी सामान सफेद रंग का होना चाहिए। जैसे- सफेद वस्त्र, आसन, पुष्प, गंध, धूप-दीप, चंदन, नैवेद्य आदि सभी सफेद रंग के होने आवश्यक हैं। जप के लिए माला तुलसी, मोती या आक की लकड़ी की होनी चाहिए। कौए के पंखों का प्रयोग भी मार्जन, पूजन, हवन में करना चाहिए। पान के पत्ते के स्थान पर कौए के पंखों का प्रयोग विद्वेषण आदि उग्र कार्यों में करना चाहिए। विद्वेषण, उच्चाटन आदि कर्मों में धतूरे के फल, बीज, जड़ आदि का अथवा कटेरी सफेद फूल वाली के पत्ते, जड़, लकड़ी का प्रयोग हवन में करें। हवन में काले तिलों का, शाकल्य में सफेद तिलों के स्थान पर उच्चाटन आदि कर्मो में करें। दरिद्रता दूर करने के लिए सफेद तिलों का प्रयोग ही करना चाहिए।

सर्व प्रथम विनियोग करें-

विनियोगः- अस्य श्री धूमावती महामन्त्रस्य, पिप्लाद ऋषिः, निवृत छन्दः, ज्येष्ठा देवता, धूं बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः-

पिप्लाद ऋषये नमः शिरसि।

निवृति छन्दसे नमः मुखे।

श्री ज्येष्ठा धूमावती देवतायै नमः हृदि।
धूं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।
धूं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर–न्यासः-

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ धीं शिरसे स्वाहा।

ॐ धूं शिखायै वषट्।

ॐ धैं कवचाय हुम्।

ॐ धौं नेत्र–त्रयाय वौषट्ं

ॐ धः अस्त्राय फट्।

ध्यान

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घां मलिनाम्बरा।
विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरल द्विजा।।
काक–ध्वज–रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा।
शूर्म हस्ताति–रूक्षाक्षी धूमहस्ता वरान्विता।।
प्रबद्ध–घोषा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्य भयदा कलहास्पदा।।

अर्थात्- भगवती धूमावती का स्वरूप विवर्ण है, चंचल है और लम्बा शरीर है। मैले और फटे हुए वस्त्र हैं, उनका विधवाओं के समान वेश है तथा खुले हुए और रूखे केश हैं। वे कौए की ध्वजा वाले रथ में बैठी हैं। ढीले-ढाले लटके हुए स्तन और उनकी दंतावली विरल है, सूप उनके हाथ में है तथा रूखे नेत्र हैं। दरिद्रता की देवी भक्तों को वर तथा अभय मुद्रा में बैठी हैं। रोग, शोक, कलह तथा दरिद्रता के नाश के लिए मां धूमावती का ध्यान व उन्हें नमस्कार करता हूं।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त मंत्र जप करें।

मूल मन्त्रः- धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

इसके अतिरिक्त उनका एक अन्य मंत्र भी है, जो बहुत अधिक प्रभावी है-

ॐ धूं धूं धूमावति आपद् उद्धारणाय कुरू-कुरू स्वाहा ।।

••

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji
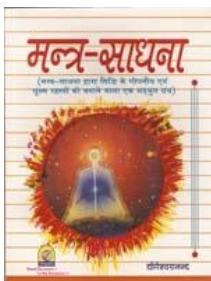
1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

Download

http://www.scribd.com/doc/10935894/Baglamukhi-Sadhna-Aur-Siddhi
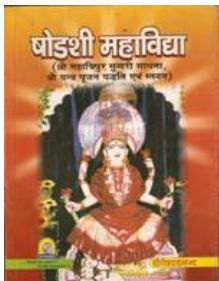
2. **Mantra Sadhna**

Download

http://www.scribd.com/doc/12594252/Mantra

3. **Shodashi Mahavidya**

Download

http://www.scribd.com/doc/16314718/tripursundari-sadhna

Other Article written on scribd.com

http://www.scribd.com/doc/35418462/Pratyangira-Mala-Mantra
http://www.scribd.com/doc/35364652/sri-vidya-lalita-Tripursundari-Tantra-Sadhana
http://www.scribd.com/doc/35363636/vipreet-pratyangira-stotra
http://www.scribd.com/doc/34582093/Very-Rare-Powerful-Mantras
http://www.scribd.com/doc/31327531/What-is-Nyasa-How-to-do-it-what-is-it-s-importance-in-the-life-of-a-Sadhak
http://www.scribd.com/doc/33211292/panchanguli-sadhana
http://www.scribd.com/doc/30029387/Tripur-Bhairavi-Sadhna
http://www.scribd.com/doc/30029251/Bhuvaneshwari-Sadhna
http://www.scribd.com/doc/29609298/Kundalini-Jagran-Through-Sahasranamam
http://www.scribd.com/doc/27558078/Aghorastra-and-Pashupatastra
http://www.scribd.com/doc/26138571/parvidya-grasini-prayog
http://www.scribd.com/doc/23324164/Procedure-to-Do-Baglamukhi-Havan-written-by-Shri-Yogeshwaranand-Ji
http://www.scribd.com/doc/21758211/Baglamukhi-Sahasranamam-in-English
http://www.scribd.com/doc/24014830/Effects-of-Saturn-in-All-the-Houses-written-By-Shri-Yogeshwaranand-Ji

http://www.scribd.com/doc/22297616/The-Way-of-Living-the-Life-How-to-Meditate-How-to-Remove-Maya
http://www.scribd.com/doc/17309551/baglamukhi-puja
http://www.scribd.com/doc/17737840/Siddh-kunjika-stotram
http://www.scribd.com/doc/17738268/BAGLAMUKHI-PRATYANGIRA-KAVACH
http://www.scribd.com/doc/17763283/Shri-Baglamukhi-Brahmastra-Mala-Mantra
http://www.scribd.com/doc/17763395/Shri-Baglamukhi-Mala-Mantra
http://www.scribd.com/doc/17763661/Baglamukhi-Gayatri-Mantra-Astra
http://www.scribd.com/doc/17763908/Baglamukhi-Panchastra
http://www.scribd.com/Baglamukhi-Shabar-Mantra/d/17764807
http://www.scribd.com/doc/17764997/Baglamukhi-Dhyaan-Mantra
http://www.scribd.com/doc/17765423/How-to-Take-Sankalp-Before-Starting-Any-Sadhna
http://www.scribd.com/doc/17885297/Baglamukhi-Panjar-Stotram
http://www.scribd.com/doc/17884911/baglamukhi-kavach
http://www.scribd.com/doc/20584852/Shri-Bagla-Suktam
http://www.scribd.com/doc/20992211/PASHUPATASTRA-of-Bhagwan-Shiva-Which-Can-Remove-Any-Problem-Of-Life